B.A. Part - II

Mau
(Dr. Ram Narain Mishra)

देकार्त की सन्देह विधि

देकार्त की दार्शनिक विधि सन्देह की विधि है। परन्तु देकार्त सन्देहवादी नहीं हैं। वे कट्टर बुद्धिवादी हैं। सन्देह उनके लिए साधन मात्र है। साध्य नहीं है। उनके अनुसार सत्य निश्चायक है। किन्तु निश्चय पर पहुँचने के लिए सन्देह आवश्यक है। यदि संशय न हो तो निश्चय कैसा। संशय ज्ञान का स्रोत है। दार्शनिक के लिए आवश्यक है कि वह किसी सिद्धान्त पर पहुँचने के पूर्व हर प्रकार की पूर्व मान्यताओं, पूर्व धारणाओं या पक्षपातों से रहित होकर विचार करे। इन्द्रिय प्रत्यक्ष या आगम से अमुक बात प्रमाणित होती है अत: वह सत्य है - इस प्रकार का विचार ठीक नहीं है। ऐसा करना रूढ़ीवाद है, पक्षपात है, अन्धविश्वास है।

देकार्त के अनुसार सत्य स्वयं सिद्ध है, निश्चायक है एवं प्रामाणिक है।

Scanned By KagazScanner

2. विश्लेषण सूत्र - समस्या को छोटे-छोटे संभव सरल से सरलतम टुकड़ों में में विभाजित करें।

3. संश्लेषण सूत्र - सरल से जटिल की ओर जाना अर्थात् समस्या पर विचार करते हुए सरल से जटिल की तरफ विचार करना।

4. समाहार सूत्र -

समस्या पर विचार का अंतिम रूप देने के पहले पुनः-पुनः अवलोकन करना कि कहीं उसका कोई भाग छूट तो नहीं गया है समाहार सूत्र कहलाता है।

इन्हीं पद्धति एवं नियमों को आधार मानकर सभी चीजों पर बारी बारी से विचार करने पर निश्चित आधार की प्राप्ति हो जाती है यही देकार्त की पद्धति अथवा देकार्त के सिद्धांत कहे जाते हैं।

—o—

Ram

Scanned By KagazScanner